ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 8, August 2019

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो में सामाजिक चेतना

डॉ. साधना अग्रवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग) डी. बी. एस . पी जी कॉलेज, कानपुर,

सार

मैत्रेयी पुष्पा हिंदी लेखिका हैं। उन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उनका जन्म 30 नवंबर, 1944 को अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गांव में हुआ। उनके जीवन का आरंभिक भाग बुंदेलखण्ड में बीता। उनकी आरंभिक शिक्षा झाँसी जिले के खिल्ली गांव में तथा एम.ए.(हिंदी साहित्य) बुंदेलखंड कालेज, झाँसी में हुआ।

उपन्यास

1) स्मृति दंश (१९९०)
2) बेतवा बहती रही (१९९३)
3) इदन्नमम (१९९४)
4) चाक (१९९७)
5) झूला नट (१९९९)
6) अल्मा कबूतरी
7) कहै ईसुरी फाग
8) चिन्हार
9) गुनाह बेगुनाह

सम्मान

1. हिंदी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान
2. कहानी 'फ़ैसला' पर कथा पुरस्कार मिला
3. 'बेतवा बहती रही' उपन्यास पर उ.प्र. हिंदी संस्थान द्वारा प्रेमचंद सम्मान
4. 'इदन्नमम' उपन्यास पर शाश्वती संस्था बंगलौर द्वारा नंजनागुडु तिरुमालंबा पुरस्कार
5. म.प्र. साहित्य परिषद द्वारा वीरसिंह देव सम्मान
6. वनमाली सम्मान 2011

मैत्रेयी के कथा साहित्य में नारी जीवन में आने वाली विभिन्न संघर्षों को उकेरा है। जो मुख्यतः समाज में महिलाओं पर लिंग भेदभाव पर हो रहे अत्याचार को प्रकाशित करते हैं। मैत्रेयी के एक-एक स्त्री पात्र संघर्ष करते नजर आते हैं। जैसे चाक के सारंग नैनी, इदन्नमम में मंदाकिनी, अल्मा कबूतरी के अल्मा एवं भूरी भाई तो झूलानट का शीलो, विजन में डाॅ. आभा व डा. नेहा, बेतवा बहती रही के उर्वशी, अगनपाखी के भुवनमोहिनी और कही ईसुरी फाग की रजऊ या ऋतु, सरस्वती, मीरा गंगिया बेड़नी या करिश्मा बेड़नी, तो गुनाह-बेगुनाह उपन्यास की सुरिन्दर कौर, रेशमी, शारदा एवं इला चैधरी जैसे अनेक स्त्री पात्र अनेक संघर्षों से जूझती नजर आती हैं। उपर्युक्त सभी उपन्यासों के कथानक या कथावस्तु भले ही अलग-अलग हो परन्तु उस कथानक के स्त्री पात्र पितृसत्ता नियमों के खिलाफ लड़ते नजर आते हैं। इसलिए मैत्रेयी जी स्त्री जीवन को लेकर लिखी गयी उत्कृष्ट कोटी

Copyright to IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 8, August 2019

के कथाकार हैं। जिनके साहित्य का केन्द्र बिन्दु स्त्री-विमर्श ही है। मैत्रेयी जी अपने जीवनकाल में अनेक ऐसे घटनाएं देखी हैं या स्वयं उस घटना के शिकार हुए हैं जो उनके कथा-साहित्य में परिलक्षित होती है। अतः मैत्रेयी जी स्त्री विमर्श के यथार्थवादी कथाकार कहलाने के पात्र हैं। इसीलिए मैत्रेयी जी को स्त्री-विमर्श के उत्कृष्ट कोटी की कथाकार कहना अपेक्षित है।

परिचय

इदन्नमम' उपन्यास की प्रमुख पात्र एक ऐसी नारी है, जो अपने युगबोध को वाणी देती हैं। अपने समय की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों को परिभाषित कर रही हैं। न तो वह किसी पुरुष द्वारा निर्देषित राह पर चल रही हैं और न ही किसी पुरुष के सहारे चल रही हैं। नारी-जीवन के छोटे-छोटे संघर्षों की परिधि से ऊपर उठाकर यहाँ नारी को एक बड़े संघर्ष से रू-ब-रू किया गया है, जो स्वतंत्र होता है। नारी-लेखन की दिषा में मंदा एक उपलब्धि है और इस प्रकार का लेखन नारी-चेतना को सषक्त बनाने के लिए सार्थक संकेत है। एक सामान्य सी अल्पसाक्षर युवती भी यदि चाहे तो जन-जागृति और सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन ला सकती है, इसी दास्तान को मैत्रेयी पुष्पा ने शब्दबद्ध किया है।[1]

उनके अनुसार पति बदलने में मेरा भी विश्वास कतई नहीं है। आज तक कुछ भी हो गया, प्रलय हो गई, मेरी नायिकाओं में किसी ने घर नहीं छोड़ा। तो मैं भी उन्हीं की सृष्टिकर्ता हूं। तो मैंने भी घर नहीं छोड़ा। लोगों ने कहा कि वो मेरे उपन्यास पढ़-पढ़कर के यादवों को भी जान गए हैं, क्योंकि 'इदन्नमम' यादवों का है, कई उपन्यास ऐसे हैं। चूंकि मैं यादव फैमिली में रही हूं, तो जाहिर है वहां का मुझ पर भी प्रभाव आया। और ऐसा नहीं है कि सारे उपन्यासों में यही सब है। मैं प्रेम की बात कर रही हूं। एक लड़के ने मुझे एक बार कविता लिखकर दी प्रेम की।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 8, August 2019

11वीं में पढ़ती थी। कविता पढ़ी, कई बार पढ़ी, अच्छी लगी। वह लड़का भी अच्छा लगने लगा। लेकिन मैं अनाथ थी और जब शादी की बात आई, तो मां के पसंद से की। हां, तब मैंने यह जरूर सोचा कि जब यह लड़का कविता लिख सकता है, तो मैं क्यों नहीं लिख सकती हूं। और वहीं से मेरी कलम चालू हो गई। जब 'इदन्नमम' लिखा, तो पहली प्रति मैंने उसी को भेजी। मैंने वही लिखा, जो मैंने चाहा। मैंने 'अल्मा कबूतरी' लिखा। राजेंद्र जी ने बड़ा मना किया था। 'अल्मा कबूतरी' ठीक-ठाक चर्चित उपन्यास है। और एक बात कहती हूं , कोई घमंड मत समझे, अहंकार मत समझे... पाठक बहुत हैं, लेखन भी अच्छा है। शिक्षा होनी चाहिए, लेकिन हमने ऐसी शिक्षित स्त्रियां खासतौर से देखी हैं, जिनमें चेतना नहीं है, जो सिंदूर पोतने में लगी रहती हैं।[2]

अवलोकन

उपन्यास 'कस्तूरी कुण्डल बसै'

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'कस्तूरी कुण्डल बसै' , केवल उपन्यास ही नहीं उनकी आत्मकथा भी है। और दूसरे शब्दों में कहा जाए तो सिर्फ आत्मकथा ही नहीं, एक फिक्शन भी है। 'कस्तूरी कुण्डल बसै' के बारे में यह तीनों बातें सच हैं, लेकिन अधूरा सच। दरअसल यह पुस्तक मैत्रेयी पुष्पा की रचनाशीलता का एक प्रयोगधर्मा प्राकट्य है, जो पाठकों को एक लेखिका की जीवन शैली, उसके संबंध, सरोकार और संघर्षों की दास्तान बड़ी रोचकता से बताती है। आरंभ से अंत तक रचना के आकर्षण से पाठक की रूचि को बाँधे रखती है।

समीक्षकीय टिप्पणी

इस पुस्तक में मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उन अंतरंग और लगभग अनछुए अकथनीय प्रसंग का ताना-बाना कलात्मक ढंग से बुना है, जिन्हें आमतौर पर सामान्यजन छुपा लेते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के इस हौसले के कारण उनका यह आत्मकथ्यात्मक उपन्यास हिन्दी में उपलब्ध आत्मकथाओं में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल हुआ है। 'चाक' , 'इदन्नमम' और 'अल्मा कबूतरी' जैसे उपन्यासों की बहुपठित लेखिका मैत्रेयी पुष्पा की इस औपन्यासिक कृति के कुछ अंश यत्र-तत्र प्रकाशित होकर पहले ही चर्चित हो चुके हैं। कहा जा सकता है कि 'कस्तूरी कुण्डल बसै' हिन्दी के आत्मकथात्मक लेखन को एक नई दिशा देने में समर्थ है

विचार - विमर्श

आज ही के दिन यानी 30 नवंबर, 1944 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा नामक गांव में जन्मी मैत्रेयी पुष्पा हिंदी साहित्य में एक ऐसा न भूलने वाला नाम है, जिन्होंने स्त्री-जीवन के समस्त पक्षों को उघाड़कर रख दिया. अपने बेबाक अंदाज के लिए लोकप्रिय मैत्रेयी जी ने ऐसी कृतियों की रचना की, जो साहित्य-इतिहास में अमर हो गईं, मैत्रेयी जी ने ऐसे सामाजिक मूल्यों, विशेष रूप स्त्री-जीवन से संबंधित मूल्यों को गढ़ा, जिन पर पहले कम ही लिखा गया और जिस बेबाकी से उन्होंने अपनी बात रखी, वह बाद की पीढ़ी की लेखिकाओं को एक नया खुला आसमान देने की मानिंद है. बुंदेलखंड की माटी में पली-बढ़ी मैत्रेयी जी ने समाज की उस सोच पर गहरी चोट की, जहां स्त्री को केवल एक गुड़िया के तौर पर देखा जाता रहा है, एक सजने-संवरने वाली गुड़िया माना जाता रहा है. वे समाज की इस सोच को तोड़ने के प्रयास में बहुत हद तक सफल भी रही हैं, उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री को उसके अस्तित्व से परिचित कराया. उसे वह पहचान दिलाने का प्रयास किया, जिसकी वह अधिकारिणी है. जीवन को परखती-खंगालती उनकी रचनाएं सामाजिक रीतियों-कुरीतियों के अनेक पक्षों को अपने में समेटे हुए हैं. समाज द्वारा स्त्री को अयोग्य ठहराने को लेकर उनके लेखन में गहरी पीड़ा देखने को मिलती है.[3]

साहित्यिक गलियारों में मैत्रेयी जी हमेशा चर्चाओं में रहीं, फिर चाहे उनका स्त्री-जीवन एवं उसके अस्तित्व पर बेबाक अंदाज में मुखर स्वर में बोलना हो या फिर अमर साहित्यकार राजेंद्र यादव जी और उनके बारे में लोगों की फुसफुसाहट हो, जितनी बाते राजेंद्र यादव जी और मैत्रेयी जी लेकर होती रही हैं, उतनी बातें शायद ही किसी और के बारे में हुई हों. लोगों का क्या है! लोग तो

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 8, August 2019

बातें बनाते ही हैं, लेकिन अगर वास्तविकता को स्वीकारा जाए तो राजेंद्र यादव जी वह व्यक्ति हैं, जिन्होंने एक मार्गदर्शक, प्रेरक और गुरु के रूप में मैत्रेयी जी का मार्ग प्रशस्त किया.

अपने लेखन में मैत्रेयी जी ने स्त्री को अपने जीवन में, अपने विचारों में और अपनी सोच में बदलाव लाने की बात जोर देकर कही है, वे लिखती हैं कि मुझे स्त्री-जीवन की वह छवि पेश नहीं करनी है, जो मर्यादा, शील-शुचिता और इज्जत के नाम पर स्त्री की नकली तस्वीर है. इसके विपरीत वे चाहती हैं कि स्त्री अपनी महत्ता का एहसास कराए. अपने आपको उस कारे से बाहर निकाले, जिसमें पुरुष के वर्चस्वादी समाज ने उसे घेरकर रखा हुआ है और उसकी सोच एवं भावनाओं को संकुचित किया हुआ है। वे चाहती हैं कि स्त्री को इसी संकुचन वाले घेरे को ही तो तोड़ना है, ताकि वह भी उड़ान भर सके और अपना योगदान देते हुए अपनी गाथा लिख सके.

मैत्रेयी जी ने हिंदी साहित्य की जिस प्रकार सेवा की और जिस प्रकार की रचनाएं उन्होंने रचीं, उससे हिंदी साहित्य तो समृद्ध हुआ ही है, साथ ही स्त्री-विमर्श को उन्होंने नई उड़ान भी दी है। उनका रचना-संसार बहुत ही विशाल है, जिसमें उनकी ऐसी-ऐसी रचनाएं समाहित हैं जिन्होंने स्त्री-जीवन को नई दिशा देने का काम किया है। मेरे विचार से मैत्रेयी जी ऐसी पहली साहित्यकार हैं, जिनकी लगभग सभी रचनाएं ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। यह अपने आपमें एक बहुत ही बड़ी बात है कि उन्होंने ग्राम्य अंचल की महिलाओं को अपनी रचनाओं की नायिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए स्त्री-विरोधी और पितृ-सत्तात्मक समाज को चुनौती देने का काम किया. अगर मैं यह कहूं कि मैत्रेयी जी एक ऐसी निर्भीक एवं निडर लेखिका हैं कि उन्होंने वही लिखा, जो उन्होंने महसूस किया या देखा, तो कोई गलत बात न होगी.

परिणाम

मैत्रेयी जी की लेखनी यूं ही चलती रहे और हमें और हमारे समाज को उनकी ज्वलंत रचनाएं मिलती रहें. मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि समाज में साहित्यकार की जरूरत हमेशा बनी रहनी चाहिए, क्योंकि साहित्यकार वह दर्पण होता है, जो समाज को और उसमें बसने वाले लोगों को वास्तविकता से समय-समय पर अवगत कराता रहता है और मैत्रेयी जी ने वास्तव में उसी दर्पण की भांति काम किया है, इसमें कोई संदेह वाली बात नहीं. आज मैत्रेयी जी ने अपने जीवन के 76 बसंत पूरे कर लिये, तो इस अवसर पर उन्हें अनेकानेक शुभकामनाएं! बेबाक और जिंदादिल महान लेखिका को हार्दिक शुभकानाएं!![4]

उनके अनुसार स्त्री को घेरने की कोशिश उसकी देह को लेकर ही की जाती रही है, मेरे बारे में भी इसीलिए यह सबकुछ कहा जाता है ताकि अपनी जुबान बंद कर लूं। एक चीज साफ जान लीजिए, मुझे ऐसा कोई डर नहीं कि सच कहने से मुझे मिलने वाले कितने पुरस्कार रुकवा दिए जाएंगे या विरोध में समीक्षाएं लिखी जाएंगी। यह तो होता ही रहा है। जहां तक रचनाओं में सेक्स उड़ेलने की बात है, इस तरह कुछ भी नहीं हुआ है। जहां घटनाक्रम ऐसा है, परिस्थितियों की मांग हुई है, वहीं मेरी नायिकाओं ने ऐसा किया है। अगर मैं जान-बूझकर सेक्स को कथा का सूत्र बनाने वाली मानसिकता रखती तो कहीं ईसुरी फाग में तो इसकी अपार संभावना थी। पूरी पुस्तक में कई जगह शरीर को लेकर फाग कही गई है। ऐसे तो काम दृश्यों की भरमार हो जाती। यह कहना आसान है कि वह वर्जनाओं से मुक्त है लेकिन क्या अल्मा या अन्य स्त्रियां सिर्फ साधारण वर्जना से घिरी हैं? यह तो यातना और यंत्रणा है। सांरग चाक में जिस स्थिति में वर्जनाएं तोड़ती नजर आती है, दरअसल वह उस समय की सामाजिक-शैक्षणिक व्यवस्था की यंत्रणाएं तोड़ रही होती है। फिर अल्मा की तुलना आप अपने समाज से क्यों करते हैं? कबूतरी एक अपराधी जनजाति की महिला है। कबूतरा या तो जंगल में रहता है या फिर जेल में। अल्मा एक मादा भी तो है। उसकी नस्ल खत्म हो रही है। फिर दुष्कर्मी के खेतों में उसके डेरे हैं। अब वह क्या करे? आप ही बताइए, जब स्त्री की जान ही सांसत में आ जाए तो वह जीने के रास्ते तो तलाशेगी ही। आखिर अकेली स्त्री से ही क्यों उम्मीद करते हैं कि वही शुचिता का खयाल रखेगी? मैं इतनी उम्र में भी रात के 12 बजे तक घर से बाहर रहने की बात कहूं तो लोग आसमान सिर पर उठा लेंगे लेकिन पति तीन बजे रात में भी घर आना चाहें तो स्वागत है, ऐसी विसंगति क्यों है? स्त्री को पता है कि वह कितनी पवित्र है और रहना चाहती है। उसकी परिभाषाएं पुरुष नहीं गढ़ सकते। पुरुष वर्चस्व के दायरे में स्त्री की देह ही होती है। जन्म से शादी के पहले तक उसी देह की

रक्षा होती है और विवाह के बाद उसका उपभोग। इस पूरे चक्र में स्त्री की योग्यता क्यों नहीं देखी जाती? देह से हटकर सोचें तो पता लगेगा कि स्त्री क्या है? मुंबई की एक महिला साहित्यकार ने कहीं कहा था, मैत्रेयी हर साल बच्चे पैदा करती हैं। मेरे उपन्यास निश्चय ही मेरी संतान हैं और किसी से कमजोर भी नहीं हैं। जब तक मुझे लगेगा मैं सशक्त बात रख रही हूं, लिखती रहूंगी। मैं यहां स्त्री का सच कहने आई हूं, सुविधाभोगी स्त्री का नहीं, उस ग्रामीण स्त्री का सच, जिसकी ओर अन्य महिला साहित्यकारों की निगाह नहीं गई है। निशाने साधे जाने से मैं भयभीत नहीं होती।[5]

निष्कर्ष

उनके अनुसार मेरे लिए साहित्य लेखन का मतलब जीवन जीना और फिर उसका चित्रण करना है। मेरा यह रास्ता आसान नहीं था। मेरी जिंदगी की इसी जद्दोजहद ने मुझे लगातार लिखने के लिए प्रेरित किया। आज मैं जहां पर हूं उसके पीछे एक लंबा संघर्ष है। मैं कुछ भी लिखूं उसको लेकर बहसें शुरू हो जाती हैं। विवाद मेरे पीछे-पीछे चलते हैं। जब 'इदन्नमम' छपा तब हिंदी के कई आलोचकों और संपादकों ने कहा कि क्या गांव ऐसा होता है? क्या ससुर ऐसे होते हैं? क्या स्त्रियां इतनी स्वतंत्रता के साथ अपना जीवन जीती हैं? मैंने इन बातों को हंसकर टाल दिया। क्योंकि जब आपने वो जीवन देखा ही नहीं है तो यह कैसे जान सकते हैं कि उस जीवन से उपजा हुआ यथार्थ कैसा होगा। मेरे पात्र केवल संघर्ष करके नहीं रह जाते, वे समाधानों के लिए जद्दोजहद भी करते हैं। वे फैसले लेते हैं। फैसलों का विरोध करने वाले लोगों का सामना भी करते हैं। 'इदन्नमम' का व्याकरण नए समय को शब्द देता है। देखिए, धारा के विपरीत जाकर सोचना और जो बनी बनाई धारणाएं हैं, उनको ध्वस्त करते हुए नए चिंतन को गति देना मेरे कथाकार मन में है। यह एक तरह से कुलीनतंत्र के प्रतिवाद का भी साहित्य है। मुझे लगता था कि अगर किसी बात को लेकर आपके मन में प्रतिरोध है और लिख सकते हैं तो लिखना चाहिए। मैंने इस बात की परवाह नहीं की थी कि इस समय आलोचक और संपादक कौन-कौन से निर्देश जारी कर रहे हैं। लोगों में कई बार सच कहने की हिम्मत नहीं होती तो कभी सच सुनने की। मैंने इसी तनी हुई रस्सी पर अपने को साधते हुए कुछ सच कहे हैं- अक्सर लक्ष्मण रेखाओं को लांघ जाने का खतरा भी उठाया है। हमारा समाज कई जातियों में बंटा हुआ है। कई हाशिए के लोग भी हमारे समाज में हैं। सडक़ों, गलियों में घूमते या अखबारों की अपराध-सुर्खियों में दिखाई देनेवाले कंजर, सांसी, नट, मदारी, सपेरे, पारदी, हाबूडे$, बनजारे, बावरिया, कबूतरे- न जाने कितनी जनजातियां हैं जो सभ्य समाज के हाशियों पर डेरा लगाए सदियां गुजार देती हैं- यह उपन्यास उन्हीं के वास्तविक यथार्थ की जटिल नाटकीय कहानी है, जिसमें मैंने उनके भीतर की दुनिया को बाहर लाने का प्रयास किया है। [6]
पढने वालों ने इस उपन्यास को हाथों-हाथ लिया है। चाक' का दूसरा नाम है समय चक्र। चाक घुमेगा नहीं तो कुछ बनाएगा भी नहीं। वह घूमेगा और मिट्टी को बिगाडक़र नया बनाएगा- नए रूप में ढालेगा। अतरपुर गांव को उसमें रहने वाली किसान पत्नी सारंग को भी ढालकर नया बना रहा है 'चाक '। लेकिन बनाना एक यातना से गुजरना भी तो है। न चाहते हुए भी सारंग निकल पड़ी है 'ढाले ' जाने की इस यात्रा पर। बेहद आत्मीय, पारिवारिक सहजता के साथ मैंने इस उपन्यास की नायिका शीलो और उसकी 'स्त्री-शक्ति' को फोकस किया है, पर कई बार पता नहीं चलता कि 'झूलानट' की कहानी शीलो की है या बालकिशन की! हां, अंत तक प्रकृति और पुरुष की यह 'लीला' एक अप्रत्याषित उदात्त अर्थ में जरूर उद्भासित होने लगती है। इस अर्थ में निश्चय ही यह विशिष्ट उपन्यास है। नहीं, 'स्त्री विमर्श' पुरुष के प्रतिरोध या प्रतिशोध का विमर्श नहीं है। यह पुरुष में एक सहयोगी की भूमिका की तलाश का विमर्श है। धर्म और परंपरा ने स्त्री को कमजोर बनाया है और यह धर्म और परंपरा पुरुष प्रधान समाज ने उस पर थोपी है। स्त्रियों की वेशभूषा के निर्धारण को ही आधार बना दिए जाने के कारण आज का स्त्री विमर्श डगमगा रहा है, इसे फिर से दिशा देने की जरूरत है। लिखना महत्त्वपूर्ण है लेकिन लिखने से अधिक महत्त्वपूर्ण है पाठकों तक अपनी बात को पहुंचाना। मैंने तो कभी यह सोचकर लिखना शुरू नहीं किया था कि मेरी यात्रा कहां तक जाएगी। समस्याओं पर एक पैनी निगाह रखते हुए, उनको अपने अनुभवों से मिलाकर विश्लेषित किया और इसके बाद जो रचनाएं बनती हैं, उन्हें बिना किसी अतिरिक्त आग्रह के पाठकों की अदालत में पेश कर दिया। यह पाठकों की उदारता है कि वे मुझे पढ़ते और सराहते हैं।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 8, August 2019

स्त्री विमर्श के बारे में भी यही करना चाहती हूं कि साहित्य और समाज को इस विमर्ष को आगे बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए।[7]

संदर्भ

1. http://www.pressnote.in/Litrature-News_271550.htmlप्रेसनोट
2. *गोपाल, राय (२०१४). हिन्दी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ° ३८७.*
3. *"जोश". मूल से 20 मार्च 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 7 जून 2012.*
4. उपन्यास और कहानी (साहित्यालोचन, हिन्दी चिट्ठा)
5. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास (गूगल पुस्तक ; लेखक - इन्द्रनाथ मदन)
6. हिन्दी उपन्यासकार कोष (गूग्ल पुस्तक ; लेखक - संतोष गोयल)
7. हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिद्धान्त (गूगल पुस्तक ; लेखक - नरेन्द्र कोहली)